B.A. Part I
(Micro Economic Theory)

निम्न प्रश्नों का उत्तर 20 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक निर्धारित है।

प्रश्न– आदर्शात्मक विज्ञान किसे कहते हैं?
उत्तर– आदर्शात्मक विज्ञान के रूप में अर्थशास्त्र भले व बुरे का निर्णय करता है। भले व बुरे का निर्णय एक मूल्य–सम्बन्धी निर्णय कहलाता है।

प्रश्न– सीमान्त उपयोगिता किसे कहते है?
उत्तर– एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से कुल उपयोगिता में होने वाला परिवर्तन सीमान्त उपयोगिता कहलाता है।

प्रश्न– मांग का नियम किसे कहते है?
उत्तर– अन्य बातों के स्थिर रहने पर किसी वस्तु की कीमत में होने वाली कमी या वृद्धि के फलस्वरूप वस्तु की मांग की मात्रा में होने वाली वृद्धि या कमी को मांग का नियम कहते है।

प्रश्न– बजट रेखा किसे कहते है?
उत्तर– बजट रेखा दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को बतलाती है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय व दोनों वस्तुओं की कीमतों के दिए होने पर प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न– उपभोक्ता की बचत किसे कहते है?
उत्तर– एक उपभोक्ता किसी वस्तु के लिए जो कीमत देता है उसकी तुलना में उसे सन्तोष बहुत अधिक मिलता है। इस प्रकार उपभोक्ता को एक प्रकार का अतिरिक्त सन्तोष मिलता है। जिसे अर्थशास्त्र में उपभोक्ता की बचत कहते हैं।

प्रश्न– उत्पादन फलन का अर्थ लिखिए?
उत्तर– उत्पादन के साधन व कुल उत्पादन के बीच भौतिक व गणितीय सम्बन्ध को उत्पादन फलन कहते है।

प्रश्न– अवसर लागत किसे कहते है?
उत्तर– अवसर लागत किसी साधन की वह सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक आय होती है। जो साधन को अन्य उद्योग–धन्धे में जाने से रोके।

प्रश्न– मांग की कीमत लोच की चाप लोच विधि को समझाइये?
उत्तर– आर्क लोच या चाप लोच विधि के अन्तर्गत मांग की लोच का अध्ययन एक मांग वक्र पर दो बिन्दुओं के बीच में किया जाता है।

प्रश्न– तकनीकी प्रतिस्थापन्न की सीमान्त दर को परिभाषित कीजिए।
उत्तर– तकनीकी प्रतिस्थापन्न की सीमान्त दर दर्शाती है एक इकाई श्रम को बढ़ाने पर पूंजी की कितनी इकाइयाँ कम की जाये।

प्रश्न– अतिरिक्त क्षमता से क्या आशय है?
उत्तर– दीर्घकाल में एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में एक फर्म MR=MC बिन्दु से पूर्व ही उत्पादन बन्द कर देती है। ऐसी दशा में उसके MR=MC व न्यूनतम औसत लागत के उत्पादन का अन्तर अतिरिक्त क्षमता कहलाता है।

प्रश्न– मांग का संकुचन किसे कहते हैं?
उत्तर– एक ही मांग वक्र पर कीमत के बढने पर मांग की मात्रा का घटना मांग का संकुचन कहलाता है।

प्रश्न– मांग की कमी किसे कहते हैं?
उत्तर– मांग वक्र का नीचे खिसकना मांग में कमी कहलाता है। इस स्थिति में पूर्व कीमत पर मांग की मात्रा में कमी आ जाती है।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– पैमाने की किफायतों का अर्थ लिखिए?
उत्तर– जब उत्पत्ति को दुगुना करने के लिए लागत को दुगुने से कम करने से ही काम हो जाता है तो उस स्थिति को पैमाने की किफायते कहा जाता है।

प्रश्न– स्थिर लागत उद्योग में दीर्घकालीन पूर्ति वक्र कैसा होता है?
उत्तर– उद्योग का पूर्ति वक्र क्षैतिज होता है।

प्रश्न– तिरछी कीमत – लोच का आशय लिखिए?
उत्तर– तिरछी लोच में एक वस्तु की कीमत के परिवर्तन का प्रभाव किसी दूसरी वस्तु की मांग की मात्रा में परिवर्तन के रूप में देखा जाता है।

प्रश्न– समोत्पत्ति वक्र की परिभाषा लिखिए?
उत्तर– समोत्पत्ति वक्र दो साधनों के उन विभिन्न संयोगों को दर्शाता है जिनका उपयोग करके एक फर्म एक वस्तु की समान मात्राएँ उत्पन्न कर सकती है।

प्रश्न– फर्म सन्तुलन की शर्तें बतलाइए?
उत्तर– इसकी दो शर्ते होती है प्रथम (MR=MC) सीमान्त आय = सीमान्त लागत एवं द्वितीय सीमान्त लागत वक्र (MC) सीमान्त आय (MR) को सन्तुलन में नीचे से काटती है।

प्रश्न– धनात्मक अर्थशास्त्र से आप क्या समझते है?
उत्तर– धनात्मक अर्थशास्त्र में ''क्या है'' का अध्ययन किया जाता है। इसमें कारण व परिणाम का परस्पर सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

प्रश्न– गिफिन वस्तुए क्या है?
उत्तर– गिफिन वस्तुओं में ऋणात्मक आय –प्रभाव प्रतिस्थापन्न प्रभाव से अधिक प्रबल होता है, जिससे कीमत के घटने पर भी वस्तु की मांग की मात्रा घट जाती है।

प्रश्न– उदासीनता वक्र को परिभाषित कीजिये?
उत्तर– उदासीनता वक्र दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों का दर्शाता है जो उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि प्रदान करते हैं।

प्रश्न– पूर्ण प्रतियोगिता किसे कहते है?
उत्तर– यदि किसी बाजार में निम्न विशेषताएं हो तो वह पूर्ण प्रतियोगिता होगी –1. अनेक फर्में, 2. समरूप वस्तुएं, 3. स्वतन्त्र प्रवेश, 4. बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान, 5. साधनों की पूर्ण गतिशीलता, 6. परिवहन लागतों की अनुपस्थिति तथा दीर्घकाल में सामान्य लाभ।

प्रश्न– विस्तार पथ से आप क्या समझते है?
उत्तर– समोत्पत्ति वक्रो तथा समलागत रेखाओं के स्पर्श बिन्दुओं को मिलाने वाले वक्र को विस्तार पथ कहते है।

प्रश्न– सीमान्त भौतिक उत्पादकता को परिभाषित कीजिए?
उत्तर– एक साधन की मात्रा स्थिर रख कर जब दूसरे साधन की मात्रा बढ़ायी जाती है तो कुल उत्पत्ति में होने वाली वृद्धि सीमान्त भौतिक उत्पत्ति कहलाती है।

प्रश्न– लाभ के जोखिम सिद्धान्त का प्रतिपादन किसने किया।
उत्तर– प्रो. हॉल ने 1907 में अपनी पुस्तक Enterprise and productive Process में जोखिम सिद्धान्त का प्रतिपादन किया।

प्रश्न– तरलता जाल से क्या आशय है?
उत्तर– ब्याज की जिस दर पर मुद्रा की मांग क्षैतिज हो जाती है, अर्थात् अत्यधिक बढ जाती है और उसके बाद की दर को घटने की आवश्यकता नही रहती उसे तरलता जाल कहा जाता है।

प्रश्न– कीमत विभेदीकरण से आप क्या समझते है?
उत्तर– जब एक एकाधिकारी एक ही वस्तु को अलग–अलग बाजारों में अलग–अलग कीमत पर बेचता है तो उसे कीमत विभेदीकरण कहते है।

प्रश्न– आभास लगान से क्या आशय है?
उत्तर– एक फर्म के लिए अल्पकाल में कीमत के औसत परिवर्तनशील लागत से अधिक होने

[J.D.P.G. COLLEGE]

(P>AVC) पर आभास लगान उत्पन्न होता है।

प्रश्न– प्रतिस्थापन वस्तुओं को परिभाषित कीजिए?

उत्तर– जब एक वस्तु के स्थान पर अन्य सम्बन्धित वस्तु का उपभोग किया जा सकें तो वह प्रतिस्थापन्न वस्तुएं कहलाती है जैसे– चाय के स्थापन पर कॉफी।

प्रश्न संख्या 2 (i) से (v) का उत्तर 100 शब्दों से अधिक नही होना चहिए :

प्रश्न– व्यष्टि और समष्टि अर्थशास्त्र में अन्तर कीजिये।

उत्तर– व्यष्टि अर्थाशास्त्र में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि परिवार व फर्मे अपने निर्णय कैसे करते है और वे बाजार में परस्पर प्रतिक्रिया कैसे करते हैं। परिवार अपना संतोष अधिकतम करना चाहते है और फर्मे अपन लाभ अधिकतम करना चाहती है। समष्टि अर्थशास्त्र में संपूर्ण अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित इकाईयों जैसे, राष्ट्रीय बचत, आर्थिक वृद्धि दर, मुद्रास्फीति, तेजी–मंदी आदि समष्टिगत इकाइयों का अध्ययन किया जाता है। नियोजन के युग में समष्टिगत अर्थशास्त्र का महत्व बढ़ गया है। आजकल मेक्रो–अर्थशास्त्रियों की बहुत मांग होने लग गयी है।

प्रश्न– प्रतिस्थापन एवं पूरक वस्तुओं में भेद कीजिये।

उत्तर– प्रतिस्थापन वस्तुएं जैसे टेरेलीन वस्त्र एवं टेरीकॉट वस्त्र एक दूसरे के स्थानापन्न माने जाते है। इनमें यदि एक का भाव घट जाता है तो उसकी स्वयं की मांग तो बढ़ जायेगी, लेकिन इसकी स्थानापन्न वस्तु की मांग घट जायेगी। जैसे यदि टेरेलीन वस्त्र का भाव 10 प्रतिशत घट जाता है और टेरीकॉट वस्त्र की मांग 20 प्रतिशत घट जाती है तो टेरीकॉट वस्त्र की मांग की तिरछी लोच = -20% / - 10% = 2 होगी। इस प्रकार पूरक वस्तुओं के लिए यदि डबल रोटी की कीमत बढती है तो डबल रोटी और मक्खन दोनो की मांग घटेगी। अतः पूरक वस्तुओं में मांग की तिरछी लोच ऋणात्मक होती है। मान लिजिए डबल रोटी 10 प्रतिशत सस्ती होती है और मक्खन की मांग 10 प्रतिशत बढती है तो डबल रोटी कि मांग की तिरछी लोच = -10% / +10% = -1 होगी। अतः पूरक वस्तुओं में मांग की तिरछी लोच ऋणात्मक होती है।

प्रश्न– औसत लागत और सीमान्त लागत के मध्य सम्बन्ध समझाइये।

उत्तर– औसत लागत = कुल लागत / उत्पादन की मात्रा होती है, और सीमान्त लागत एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन से कुल लागत में होने वाली वृद्धि को कहते है। जब औसत लागत घटती है तो सीमान्त लागत उससे नीचे रहती है। सीमान्त लागत औसत लगत के न्यूनतम बिन्दु को काटती हुई उससे ऊपर रहती है। इसका आशय यह हुआ कि जब औसत लागत बढती है तो सीमान्त लागत उससे उपर रही है। AC और MC का यही सम्बन्ध होता है। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि जब AC घटती है तो MC का उसके अनुरूप सारी दूरी तक घटना जरूरी नही होता, वह कुछ दूरी तक घट सकती है और कुछ दूरी तक बढ भी सकती है। लेकिन MC के लिए AC के न्यूनतम बिन्दु को काटते हुए उससे ऊपर बढते हुऐ रहना आवश्यक माना गया है।

प्रश्न– एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता की मुख्य विशेषताएँ लिखिये।

उत्तर– यह चार मान्यताओं पर आधारित है : (i) इसमें अनेक फर्मे होती है। प्रत्येक फर्म अपने उत्पत्ति के निर्णय लेती है और अनेक प्रतिस्पर्धियों की प्रतिक्रियाओं की कोई परवाह नही करती।

(ii) इनमें वस्तु–विभेद या अंतर पाया जाता है, अर्थात् फर्म एक विशेष किस्म के ब्राण्ड का उत्पादन करती है। अन्य फर्मों की वस्तुएं उसकी वस्तु के समीप का स्थानापन्न होती है।

(iii) फर्मे उस उद्योग में प्रवेश करने व छोड़ने को स्वतंत्र होती है।

(iv) उद्योग में सिमेट्री की दशा पायी जाती है। इसका अर्थ यह है कि यदि वह उद्योग के 5 प्रतिशत भाग पर कब्जा कर लेती है तो इसका अर्थ यह है कि वह इस उद्योग की प्रत्येक फर्म के 5 प्रतिशत भाग पर अपना कब्जा जमा लेती है।

J.D.P.G. COLLEGE

प्रश्न– तरलता पसन्दगी के उद्देश्यों का विवेचन कीजिये।

उत्तर– कीन्स ने मुद्रा की मांग, अर्थात् तरलता पसंदगी के तीन उद्देश्य बतलाये थे– पहला लेन–देन या सौदो का उद्देश्य, अर्थात आय की प्राप्ति व आय के व्यय के बीच एक अंतराल होता है और फर्म को कच्चा माल खरीदने, मजदूरी देने व अन्य खर्चों के लिए तरलता की जरूरत होती है। **इसका आमदनी से जुडाव होता है, न कि ब्याज की दर से।**

दूसरा उद्देश्य, सतर्कता का होता है, अर्थात् आकस्मिक खर्चें के लिए नकदी की जरूरत होती है। सर्तकता के लिए तरलता कि मांग व्यवसाय की प्रकृति साख की सुविधा आदि निर्भर करती है। लेकिन यह भी ब्याज की दर से स्वतंत्र मानी जाती है।

तरलता का तीसरा उद्देश्य सट्टे का प्रयोजन माना गया है। लोग ब्याज की दरों के परिवर्तनों का लाभ उठाने के लिए अपने पास नकद राशि रखना पसन्द करते है। ब्याज की दर बढने पर वे अपने पास की तरलता राशि का प्रयोग बांड खरीद कर ब्याज अर्जित करने में करना चाहेंगे। यह तरलता का उद्देश्य ब्याज की दर से गहरा सम्बन्ध रखता है। कीन्स के सिद्धान्त में ब्याज की दर का निर्धारण करने में तरलता –पसंदगी मुद्रा की मांग को प्रभावित करती है। **ब्याज की नीची दरों की तरलता–पसंदगी अधिक होती है, और ब्याज की ऊंची दरों पर तरलता पसंदगी नीची होती है।**

100 शब्दों तक उत्तर –

प्रश्न– व्यष्टि अर्थशास्त्र व समष्टि अर्थशास्त्र में किसके अध्ययनों का महत्व आज के युग में ज्यादा माना जाता है?

उत्तर– वैसे दोनों के अध्ययन का अपना–अपना महत्त्व होता है, क्योकि व्यष्टि अर्थशास्त्र में उपभोक्ता फर्म व वैयक्तिक उद्योगों के कार्य–कलापों का अध्ययन किया जाता है और समष्टि अर्थशास्त्र में आर्थिक वृद्धि–दर, सकल राष्ट्रीय आय, रोजगार, मुद्रास्फीति, आदि समष्टिगत चलराशियों का अध्ययन किया जाता है। मेक्रो के आधार के रूप में माइक्रो का अध्ययन काम करता है। लेकिन आज के वैश्वीकरण के युग में मेक्रो का महत्व बढ़ गया है। आज विकसित व विकासशील तथा इमरजिंग अर्थव्यवस्थाएँ मेक्रो समस्याओं से जूझ रही है। उदाहरण के लिए, विशेषज्ञों के अनुसार वर्तमान में (2015 में) विश्व पुनः'तीसियों के दशक की महान आर्थिक मंदी के जैसी अवस्था की ओर अग्रसर हो रहा है। (संकेत = RBI के गवर्नर डॉ. रघुराम राजन का) ऐसी स्थिति में ब्याज, वित्तिय स्थिति, निवेश, क्रूड तेल के भाव, आदि के प्रश्न सर्वाधिक विचारणीय बन गये है; इसलिए आजकल मेक्रो का स्थान ज्यादा ऊँचा हो गया है। ब्रिटेन के यूरो से 24 जून, 2016 को अलग हो जाने से विश्व अर्थव्यवस्थाओं पर मैक्रो –प्रभाव पडेगें।

प्रश्न– कीमत, प्रतिस्थापन व आय प्रभावों का परस्पर सम्बन्ध बतलाइए।

उत्तर– जब वस्तु की कीमत घटने पर उसकी मांग की मात्रा बढ़ती है तो उसे कीमत–प्रभाव कहा जाता है। अर्थशास्त्र में तटस्थता वक्रों की सहायता से कीमत–प्रभाव को दो भागों में विभक्त करके देखा जाता है– ये दो भाग है – प्रतिस्थापन– प्रभाव और आय –प्रभाव। प्रतिस्थापन –प्रभाव का आशय यह है कि कीमत के घटने पर उपभोक्ता अन्य मंहगी वस्तुओं के स्थान पर इस अपेक्षाकृत सस्ती वस्तु का प्रतिस्थापन करना चाहेगा, जिससे इसके उपभोग में वृद्धि होगी। प्रतिस्थापन–प्रभाव का निशान सदैव ऋणात्मक होता है, क्योंकि कीमत के घटने पर मांग की मात्रा बढती है अथवा कीमत के बढने पर मांग की मात्रा घटती है। आय प्रभाव सामान्य वस्तुओं में धनात्मक एवं घटिया वस्तुओं में ऋणात्मक होता है। इस प्रकार कीमत–प्रभाव स्वय प्रतिस्थापन प्रभाव व आय –प्रभाव का जोड होता है जिसे तटस्थता वक्रो की सहायता से दर्शाया जा सकता है।

प्रश्न– पैमाने के प्रतिफलों व उत्पत्ति के नियमों में अंतर करिए।

उत्तर– उत्पत्ति के नियमों का सम्बन्ध अल्पकाल से होता है, जहां कम से कम एक साधन स्थिर है और कुछ साधन परिवर्तनशील होते हैं (प्रायः हम एक साधन स्थिर रखकर व एक साधन

J.D.P.G. COLLEGE

परिवर्तनशील लेकर उत्पत्ति का प्रभाव देखते हैं)। इसमें उत्पादन की तकनीक स्थिर मानी जाती है। उत्पत्ति के नियम तीन प्रकार के माने गये है – वर्धमान, समान व ह्रासमान। इनमें उत्पत्ति ह्रास नियम की ही ज्यादा चर्चा की जाती है, क्योंकि अन्ततोगत्वा एक सीमा के बाद यही नियम क्रियाशील होता है। उत्पादक उत्पादन की दूसरी अवस्था में उत्पादन करना पसंद करेगा। पैमाने के प्रतिफलों का सम्बन्ध दीर्घकाल से होता है जिसमें उत्पादन के सभी साधनएक साथ परिवर्तित किये जा सकते है। यहां भी तीन प्रकार के प्रतिफल – वर्धमान, समान व ह्रासमान–मिल सकते है। इससे क्रमशः उत्पादन की लागते प्रभावित होती है।

प्रश्न– पूर्ण प्रतिस्पर्धा व विशुद्ध प्रतिस्पर्धा में अन्तर स्पष्ट कीरिए।

उत्तर– विशुद्ध प्रतिस्पर्धा की तीन शर्ते होती है : यथा, (i) अनेक फर्मो का होना, जहाँ एक फर्म कुल माल का थोड़ा–सा अंश उत्पन्न करती है, इसलिए वह कीमत–स्वीकारक होती है, न कि कीमत –निर्माण करने वाली। (ii) समरूप वस्तुएँ होती है – ग्राहक की निगाह में वस्तु को समरूप (एक–सी) माना जाता है। (iii) फर्मो का स्वतंत्र प्रवेश हो सकता है और वे घाटे की स्थिति में उद्योग को छोड़कर बाहर भी जा सकती है।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा में इन तीनों शर्तों के साथ कुछ अतिरिक्त शर्ते भी शामिल होती है; जैसे (i) क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं की पूरी जानकारी होती है; (ii) उद्योगों के बीच साधनों की पूर्ण गतिशीलता होती है। वे एक उद्योग से दूसरे उद्योग व एक स्थान से दूसरे स्थान में आ जा सकते है। (iii) परिवहन लागत नहीं होती क्योंकि इनके होने से कीमतों में अंतर उत्पन्न होने लगता है। अतः पूर्ण प्रतिस्पर्धा विशुद्ध प्रतिस्पर्धा विशुद्ध प्रतिस्पर्धा से ज्यादा व्यापक होती है।

प्रश्न– वास्तविक लागत व अवसर लागत में भेद करिए।

उत्तर– एक वस्तु के निर्माण में सभी किस्म का जो श्रम प्रयास या परिश्रम लगता है एवं पूंजी की बचत के लिए जो प्रतीक्षा करनी होती है – वे सब परिश्रम व प्रतिक्षा तथा त्याग मिलकर उस वस्तु की वास्तविक लागत कहलाते है। भूमि प्रकृति की भेंट होने के कारण इसकी कोई वास्तविक लागत नहीं होती। चूंकि वास्तविक लागत को मापना कठिन होता है, इसलिए इसका वास्तविक जगत में महत्व कम होता है।

अवसर लागत या वैकल्पिक लागत का अनुमान एक साधन की अपने सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक उपयोग में प्राप्त हो सकने वाली मुद्रा से लगाया जाता है। **हम पहले बतला चुके है, वैकल्पिक या अवसर लागत की अवधारणा का उपयोग लगान के आधुनक सिद्धान्त में किया जा सकता है।**

प्रश्न– एकाधिकार में एक पूर्ति–वक्र का स्वरूप कैसा होता है?

उत्तर– एकाधिकार में पूर्ति वक्र को परिभाषित नही किया जा सकता।

इसमें वस्तु की बाजार–कीमत और उसकी पूर्ति की मात्रा में कोई निश्चित सम्बन्ध नही पाया जाता। एकाधिकारी सीमान्त लागत को तो सीमान्त आय के बराबर करता है ताकि वह अपना लाभ अधिकतम कर सके, लेकिन उसके लिए सीमान्त आय (MR) कीमत (Price) के बराबर नही होती। इसीलिए वह सीमान्त लागत को कीमत के बराबर नही हो सकती है। इसके अलावा उसके लिए एक ही कीमत पर उत्पत्ति की भिन्न भिन्न मात्राएँ हो सकी है। ऐसी दशा में एकाधिकार में पूर्ति –वक्र अनुपथित होता है। एकाधिकार व पूर्ण प्रतिस्पर्धा में यही एक बड़ा मूलभूत अंतर माना गया है।

प्रश्न– ब्याज के क्लासिकल व कीन्सियन सिद्धान्त में अंतर करिए।

उत्तर– ब्याज के क्लासिकल सिद्धान्त में उधार देने में त्याग व प्रतीक्षा शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसके अनुसार बचत ब्याज की दर पर निर्भर करती है और निवेश की मांग भी ब्याज की दर पर निर्भर करती है। ब्याज की दर बढने से बचत तो बढती है लेकिन निवेश में कमी आती है। संतुलन में ब्याज की दर पर निवेश व बचत दोनो परस्पर बराबर हो जाते है।

[J.D.P.G. COLLEGE]

कीन्स के ब्याज के तरलता पसंदगी सिद्धान्त में ब्याज को तरलता के त्याग का पुरस्कार माना जाता है। ब्याज की दर मुद्रा की मांग व पूर्ति द्वारा निर्धारित होती है। मुद्रा की पूर्ति केन्द्रीय बैंक व सरकार के अधिकार में होती है। मुद्रा की पूर्ति बढाने से ब्याज की दर घटती है और मुद्रा की पूर्ति घटाने से ब्याज की दर बढती है। कीन्स के सिद्धान्त में बचत व निवेश के अंतर आय के परिवर्तनों के माध्यम से समान होते हैं। इस प्रकार क्लासिकल सिद्धान्त में 'ब्याज–प्रभाव' प्रमुख होता है, जब कि कीन्स के सिद्धान्त में 'आय–प्रभाव' प्रमुख होता है, जिससे बचन व निवेश में सतुलन स्थापित हेाता है।

प्रश्न– एकाधिकारात्मक प्रतिस्पर्धा व अपूर्ण प्रतिस्पर्धा में क्या अंतर होता है?

उत्तर– एकाधिकारात्मक प्रतिस्पर्धा अपूर्ण प्रतिस्पर्धा का एक रूप माना जाता है। इसके अलावा अपूर्ण प्रतिस्पर्धा में बाजार के कई अन्य रूप भी पाये जाते है; जैसे द्वयाधिकार, अल्पाधिकार (विक्रेताओं का) (Oligopoly) अथवा क्रेताओं का एकाधिकार (oligopsony), द्वयाधिकाएं (एक तरफ विक्रेता का एकाधिकार और दूसरी तरफ क्रेता या क्रेताओं का एकाधिकार) (मिल मालिकों व मजदूर संघो का परस्पर संघर्ष), आदि। एकाधिकारात्मक प्रतिस्पर्धा में अनेक फर्में वस्तु– विभेद की स्थिति में परस्पर प्रतिस्पर्धा करती है, विज्ञापन पर व्यय करती है और अपना माल बेचने का प्रयास करती हैं।

अतः अपूर्ण प्रतिस्पर्धा में एकाधिकारात्मक प्रतिस्पर्धा के अलावा विशेषतया द्वयाधिकार, अल्पाधिकार आदि की बाजार–दशाएँ भी देखने को मिलती है। इस प्रकार एकाधिकारात्मक प्रतिस्पर्धा बाजार के रूप का अपूर्ण प्रतिस्पर्धा का सबसे बड़ा अंश माना जा सकता है।

प्रश्न– कुल उपयोगिता एवं सीमान्त उपयोगिता के मध्य सम्बन्ध बताइये।

उत्तर– एक उपभोक्ता को किसी दिये हुए समय में एक वस्तु की विभिन्न इकाइयों के उपभोग से जो कुल सन्तुष्टि प्राप्त होती है, उसे कुल उपयोगिता कहते है। उपभोग में एक इकाई को बढाने से कुल उपयोगित में जो परिवर्तन आता है उसे सीमान्त उपयोगिता कहते है। जब कुल उपयोगिता बढ़ती है तो सीामन्त उपयोगिता घटती है। जब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है तो सीमान्त उपयोगिता शून्य होती है। जब कुल उपयोगिता घटने लगती है तो सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक (nagative) हो जाती है। सीमान्त उपयोगिता कुल उपयोगिता के किसी भी बिन्दु पर (मात्रा) उसके ढाल (slope) के बराबर होती है।

प्रश्न– हीन वस्तुओं तथा गिफिन वस्तुओं में अन्तर कीजिये।

उत्तर– हीन या घटिया वस्तुओं में आय–प्रभाव ऋणात्मक होता है यह सामान्य वस्तुओं में धनात्मक होता है। कुछ हीन या घटिया वस्तुएँ ऐसी होती है जिनमें आय–प्रभाव प्रतिस्थापन प्रभाव से अधिक प्रबल होने के कारण कीमत के घटने पर वस्तु की मांग की मात्रा को घटा देता है। उन्हें गिफिन वस्तुएँ कहते है। उदाहरण के लिए, यदि एक उपभोक्त के लिए यदि डालडा घी की मांग 100 रू. प्रति किलो पर 4 किलो है, और 80 रू. प्रति किलो पर 3 किलो है, तो वह वस्तु उसके लिए गिफिन वस्तु कहलायेगी। स्मरण रहे कि सभी घटिया वस्तुएं गिफिन वस्तुएं नही होती, लेकिन सभी गिफिन वस्तुए घटिया या हीन वस्तुएं होती है।

प्रश्न– पैमाने के प्रतिफल क्या है?

उत्तर– अल्पकाल में एक साधन को स्थिर रखकर दूसरे साधन को बढाकर उत्पत्ति पर उसका प्रभाव देखा जाता है। यह उत्पत्ति के नियमों के अन्तर्गत किया जाता है। लेकिन दीर्घकाल में उत्पादन के सभी साधन एक साथ परिवर्तित किये जा सकते है जिससे पैमाने के प्रतिफलों की स्थिति उत्पन्न होती है। इस सम्बन्ध में तीन प्रकार की दशाएँ हो सकती है। यदि उत्पादन के सभी साधनों में 10% वृद्धि की जाती है और कुल उत्पादन में 10% वृद्धि होती है, तो पैमाने के समान प्रतिफलों की दशा होगी, यदि उत्पादन में 10% से ज्यादा वृद्धि होती है तो वर्धमान प्रतिफलों की दशा मानी जायेगी और यदि उत्पादन में 10% से कम वृद्धि होती है तो ह्यसमान प्रतिफलों की दशा मानी जायेगी।

[J.D.P.G. COLLEGE]

(पैमाने के प्रतिफलों एवं परिव्यय के प्रतिफलों में अन्तर होते है। पैमाने के प्रतिफलों में सभी साधन एक से अनुपात में परिवर्तित किये जाते है, जबकि परिव्यय के प्रतिफलों में स्वयं साधनों के अनुपात बदल जाते है।)

प्रश्न– एकाधिकार एवं एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में अन्तर बताइये।

उत्तर– एकाधिकार में वस्तु का अकेला उत्पाद होता है, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में अनेक उत्पादक होते है। एकाधिकार में प्रतिस्पर्धा का अभाव होता है, जबकि एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में प्रतिस्पर्धा का जोर रहता है। एकाधिकार में वस्तु एक–सी होती है जबकि एकाधिकारात्मक प्रतिस्पर्धा में वस्तु विभेद पाया जाता है। इस प्रकार के बाजार में अकेला विक्रेता कीमत–निर्धारण, विज्ञापन व वस्तु–विभेद के विषय में अपनी स्वतन्त्र नीति अपना सकता है। ऐसे बाजार में किसी भी अकेले विक्रेता के कार्यकलापों पर अन्य विक्रेता विशेष ध्यान नही देते। वह कीमत घटाकर अन्य विक्रेताओं को गहरी क्षति नहीं पहुंचा सकता। आज बाजार में एकाधिकार से ज्यादा एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता की दशा पायी जाती है, जिसमें अनेक फर्में वस्तु–विभेद की दशा में काम करती रहती है।

प्रश्न– तरलता जाल को समझाइये।

उत्तर– तरलता जाल की स्थिति में ब्याज की दर इतनी कम (नीची) हो जाती है कि कोई भी व्यक्ति ब्याज देने वाली परिसम्पत्ति या बांड अपने पास नही रखना चाहता। लोग अपने पास केवल नकद रखना चाहते है। ऐसी दशा में लोगों की तरलता –पसंदगी निरपेक्ष किस्म की होती है। यदि सरकार ऐसी स्थिति मुद्रा की पूर्ति बढाती है तो ब्याज की दर कम नही होती। तरलता–जाल का विशेष उल्लेख कीन्स ने किया था। उसके वर्णन के अनुसार मुद्रा की पूर्ति में वृद्धि से, सिद्धान्ततः समग्र मांग प्रभावित नही होती। तरलता–जाल की दशा में मुद्रा व बांड एक दूसरे के पूर्ण स्थानापन्न हो जाते है

प्रश्न– कीमत रेखा या बजट रेखा क्या होती है?

उत्तर– कीमत रेखा दो वस्तुओं के उन संयोगो को दर्शाती है जिन्हे उपभोक्त अपनी सीमित आय व दोनो वस्तुओं की कीमतों के दिये हुए होने पर प्राप्त कर सकता है। इसे प्राप्त संयोगों की रेखा भी कहा जाता है। मान लीजिए, एक उपभोक्ता की सीमित आय 100 रू. है और X-वस्तु का भाव 4 रू. प्रति इकाई है और Y- वस्तु का भाव 5रू. प्रति इकाई है तो वह अपनी सम्पूर्ण आय X पर खर्च करके 25 इकाई व Y पर खर्च करके 20 इकाई प्राप्त कर सकेगा। चित्र स्वयं बनायें। यह बजट रेखा जिस तटस्थता वक्र के एक बिन्दु को स्पर्श करेगी, वह बिन्दु उपभोक्त के लिए संतुलन –बिन्दु माना जायेगा, जो दी हुई आमदनी व X तथा Y के दिये हुए भावों पर दोनो वस्तुओं की अलग–अलग मात्राओं को दर्शायेगा। संतुलन के बिन्दु पर प्रतिस्थापन की सीमान्त दर $MRS_{xy} = \frac{P_x}{P_y}$ (दोनो वस्तुओं की कीमतों के अनुपात) होगी।

प्रश्न– उपभोक्ता की बचत की अवधारणा कितनी सार्थक है?

उत्तर– उपभोक्ता की बचत का आशय है एक व्यक्ति एक वस्तु को प्राप्त करने के लिए क्या दे सकता है और वास्तव में वह क्या देता है – इन दोनो का अंतर उपभोक्ता की बचत होती है। मान लीजिए एक एकाधिकारी किसी उपभोक्ता से 100 रू. मांगता है, और वह वस्तु उसे 25 रू. में मिल जाती है तो उपभोक्ता की बचत (100–25) =75 रू. हुई। स्मरण रहे कि 75 रू. को मानसिक संतोष के रूप में ही देखा जाना चाहिए, उपभोक्ता को भौतिक रूप में 75रू. नही मिल गये, लेकिन वस्तुतः उसे यह सौदा उसके के लिए मुद्रा में 100 रू. के समान माना जायेगा। अतः उपभोक्ता की बचत की अवधारणा सार्थक मानी जा सकती है, काल्पनिक नही।

प्रश्न– साधनों के अनुकूलतम संयोग को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– इसे साधनों का न्यूनतम लागत का संयोग भी कहा जाता है। समोत्पत्ति वक्रो व समलागत रेखाओं का उपयोग करके दो साधनों के

[J.D.P.G. COLLEGE]

अनुकूलतम संयोग की स्थिति स्पष्ट की जा सकती है। यह संयोग उस बिन्दु पर होता है जहाँ पर सम्बन्धित समलागत रेखा एक समोत्पत्ति वक्र को स्पर्श करती है। यही साधनों का न्यूनतम लागत वाला संयोग भी होता है।

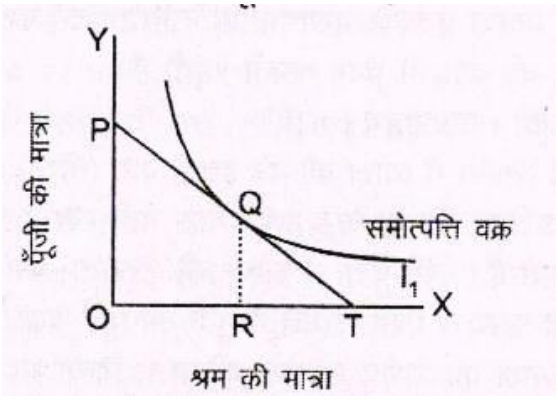

चित्र में I_1 एक समोत्पत्ति वक्र है जो श्रम व पूंजी के विभिन्न संयोगों पर उत्पत्ति की समान मात्रा को दर्शाता है। PT एक समलागत रेखा है (समस्त व्य श्रम पर करने पर OT श्रम की मात्रा और समस्त व्यय पूंजी पर करने पर OP पूंजी की मात्रा लगाने से PT समलागत रेखा बनती है। यह समोत्पत्ति वक्र को Q बिन्दु पर छूती है।) अतः Q बिन्दु साधनों के सर्वोतम संयोग का सूचक है जहां OR श्रम व RQ पूंजी लगाने से I_1 समोत्पत्ति वक्र पर अधिकतम उत्पादन (न्यूनतम लागत) पर प्राप्त होता है।

प्रश्न– पूर्ण प्रतिस्पर्धा व अपूर्ण प्रतिस्पर्धा में अन्तर स्पष्ट करिए।

उत्तर– पूर्ण प्रतिस्पर्धा के बाजार में निम्न छः शर्ते होती है – यथा, अनेक फर्मे, समरूप वस्तुएँ (एक–सी वस्तुए), स्वतंत्र प्रवेश या स्वतंत्र रूप से छोडकर जाने की स्थिति, बाजार कि दशाओं कि क्रेताओं व विक्रेताओं को पूरी जानकारी उद्योगों के बीच साधनों की पूर्ण गतिशीलता और परिवहन की लागतों का नही होना। पूर्ण प्रतिस्पर्धा में कीमत एक फर्म के लिए दी हुई होती है। इसमें अनेक क्रेता व अनेक विक्रेता परस्पर प्रतियोगिता करते है। इसका सैद्धान्तिक व्यष्टि अर्थशास्त्र में काफी महत्व माना गया है।

अपूर्ण प्रतिस्पर्धा के कई रूप होते है, जैसे एकाधिकार, द्वयाधिकार, अल्पाधिकार, एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता आदि। इनकी अलग–अलग विशेषताएं होती है। इनमें से आज कल अल्पाधिकार एवं एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता का ज्यादा प्रचलन हो गया है।

प्रश्न– कीन्स के ब्याज के तरलता सिद्धान्त के प्रमुख निष्कर्ष लिखिए।

उत्तर– कीन्स के अनुसार ब्याज तरलता का पुरस्कार होता है। लोग अपने पास नकद–राशि सौदे के उद्देश्य के लिए (आम लेनदेन के प्रयोजन के लिए), सतर्कता या अप्रत्याशित तथा आकस्मिक खर्चों के लिए एवं सट्टे के प्रयोजन के लिए (ब्याज की दर से सम्बन्धित) रखना पसंद करते है।

अतः कीन्स के अनुसार ब्याज की दर मुद्रा की मांग व पूर्ति से निर्धारित होती है, केन्द्रीय बैंक मुद्रा की पूर्ति बढाकर ब्याज को घटाता है और मुद्रा की पूर्ति घटकार ब्याज की दर को बढाने का प्रयास कर सकता है। मुद्रा के तरलता सिद्धान्त में मुद्रा की मांग व पूर्ति स्टॉक की अवधारणाएं है, क्लासिकल सिद्धान्त में बचत व निवेश में अंतर ब्याज के माध्यम से स्थापित होता है, जबकि कीन्स के सिद्धान्त में यह आय के परिवर्तनों के माध्यम से स्थापित होता है।

प्रश्न– उत्पादन सम्भावना वक्र से आपका तात्पर्य है? चयन कि मूलभूत आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए इस वक्र का उपयोग कैसे किया जाता है?

उत्तर– उत्पादन सम्भावना वक्र दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को बतलाता है जो उत्पादन के साधनों का पचलित टेक्नोलोजी की दशा में पूर्ण व कार्यकुशल उपयोग करने पर प्राप्त हो सकते है।

उत्पादन सम्भावना वक्र की मान्यताएँ –

1. अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार पाया जाता है।
2. साधनों की पूर्ति स्थिर मानी जाती है।
3. उत्पादन की टेक्नोलोजी स्थिर रहती है।
4. साधनों का उपयोग पूर्ण कार्यकुशलता से हो रहा है।

उत्पादन सम्भावना वक्र के प्रकार –

(i) नतोदर PCC–

(ii) उन्नतोदर PCC-

(iii) एक सीधी रेखा के रूप में PCC–

प्रश्न– कुल उपयोगिता और सीमान्त उपयोगिता का अर्थ व सम्बन्ध बताते हुये मार्शल के उपयोगिता अधिकतम सिद्धान्त को स्पष्ट कीजिए।

या

सम–सीमान्त उपयोगिता नियम को उदाहरण सहित स्पष्टीकरण तथा वास्तविक जीवन इस नियम के लागू होने क्या कठिनाई है।

उत्तर– ***सीमान्त उपोगिता*** *– किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई के प्रयोग से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि होती है उसे सीमान्त उपयोगिता कहते है।*

- **सीमान्त अयोगिता उदाहरण द्वारा –**
- **कुल उपयोगिता –**
- **कुल उपयोगिता और सीमान्त उपयोगिता के मध्य सम्बन्ध–**
- **परिभाषा –**
- **मान्यताएँ –**
  1. उपयोगिता मापनीय है।
  2. उपभोक्ता की आय व वस्तुओं की कीमते दी हई हो।
  3. मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता स्थिर है।
  4. ह्यासमान सीमान्त उपयोगिता का नियम लागू होता है।
  5. उपभोक्ता की आमदनी स्थिर व अधिमान, रूचि, पसन्दगी अपरिवर्तनीय होती है।
  6. एक वस्तु की उपयोगिता सारणी दूसरी वस्तुओं की उपयोगिता सारणी स्वतन्त्र मानी जाती है।
- Condition of consumer's equilibrium **(साम्य की शर्त)–**
  (i) $\frac{\mathrm{Mu_x}}{\mathrm{P_x}} = \frac{Mu_y}{P_y} = Mu_m$
  (ii) $\mathrm{X.P._x + Y.P_y = I}$
- **n वस्तुओं की स्थिति में –**
  (i) $\frac{\mathrm{Mu_1}}{\mathrm{P_1}} = \frac{Mu_2}{\mathrm{P_2}} . = \frac{Mu_n}{\mathrm{P_n}} = Mu_m$
  (ii) $\mathrm{X_1P_1 + X_2P_2 + ...+X_n\ P_n = I}$
- **सम–सीमान्त उपयोगिता नियम की आलोचना या वास्तविक जीवन में इस नियम के लागू करने में कठिनाई –**

प्रश्न– निम्न में से किन्ही 2 पर टिप्पणी लिखिए?

उत्तर– (A) **मांग की लोच का मापन –** मांग की लोच को मापने की मुख्य विधियाँ जो निम्न है।

(i) कुल व्यय विधि
(ii) मांग की चाप लोच (आर्क विलोच) विधि
(iii) मांग की बिन्दु लोच विधि

टिप्पणी :–

(B) **उपभोक्ता की बचत –** एक उपभोक्ता किसी वस्तु से वंचित रहने की अपेक्षा जो कीमत उसे वस्तु के लिए देता है व जो कीमत देना चाहता है। उसका अन्तर ही उपभोक्ता की बचत कहलाता है।

चित्र की सहायता से स्पष्टीकरण – मांग वक्र के नीचे का भाग उपभोक्ता की बचत कहलाता है।

(C) **सीमान्त उपयोगिता ह्यस नियम –**

प्रश्न– पूर्ण प्रयोगिता से आय क्या समझते है। उपर्युक्त रेखा चित्रो की सहायता से पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत अल्पकाल तथा दीर्घकाल में फर्म का सन्तुलन समझाइये?

उत्तर– पूर्ण प्रतियोगिता विशुद्ध प्रतियोगिता से अधिक व्यापाक होती है। विशुद्ध प्रतियोगिता में निम्न शर्ते जोड़ने से वह पूर्ण प्रतियोगिता कहलाती है।

विशुद्ध प्रतियोगिता की विशेषताएँ–

(A) अनेक फर्मे
(B) समरूप वस्तुएँ
(C) स्वतन्त्र प्रवेश

इन तीन विशेषताओं के साथ निम्न विशेषताएँ जोडने से पूर्ण प्रतियोगिता कहलाती है।

(A) बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान

J.D.P.G. COLLEGE

(B) उद्योगों के बीच साधनों की पूर्ण गतिशीलता

(C) परिवहन लागतों की अनुपस्थिति

- **पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत का निर्धारण –**
- **पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म का साम्य या अनुकुलतम उत्पादन का बिन्दु –**
- **प्रतियोगिता में फर्म का अल्पकालीन सन्तुलन –**
  - (a) **असामान्य लाभ –**
  - (b) **सामान्य लाभ –**
- **पूर्ण प्रतियोगिता में दीर्घकालीन सन्तुलन –**

प्रश्न– वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए?

उत्तर– वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त के अनुसार, प्रत्येक उत्पादन की कीमत अथवा पुरस्कार उस साधन की सीमान्त उत्पादकता पर निर्भर है और उसी के द्वारा निर्धारित होता है।

(A) उत्पादन के प्रत्येक साधन का मूल्य अथवा पारिश्रमिक

(B) पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत उत्पादन के साधनों का मूल्य निर्धारण या फर्म का साम्य

(C) अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत साधन का मूल्य निर्धारण व फर्म का साम्य

- **वितरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की मान्याएँ –**
- **विवरण के सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त की आलोचना–**

प्रश्न– रिकार्डो के लगान सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए?

उत्तर– डेविड रिकार्डो प्रथम अर्थशास्त्री थे, जिन्होने लगान के सम्बन्ध में निश्चित एवं व्यवस्थित विचार प्रस्तुत किया। उन्होने उत्पादन के साधन के रूप में भूमि की विशेषताओं को ध्यान में रखकर लागत के सिद्धान्त का प्रतिपादन भूमि के सन्दर्भ में ही किया है। उन्होने अपने सिद्धान्त में यह निष्कर्ष निकाला है कि लगान एक प्रकार का अन्तरमूलक लाभ का आधिक्य है। यह लाभ या आधिक्य भूमि की कुछ विशेषताओं के कारण उदय होता है।

रिकार्डो के अनुसार, ''लगान भूमि की उपज का यह भाग है जो भूमिपति को भूमि की मौलिक तथा अविनाशी शक्तियों के प्रयोग के लिए दिया जाता है। रिकार्डो के अनुसार केवल भूमि को ही लगान प्राप्त होता है।**ह**

- **सिद्धान्त की मान्यताएँ –**
  - (A) **विस्तुत खेती में लगान –**
  - (B) **गठन खेती में लगान –**
  - (C) **खेती की स्थिति तथा लगान –**
- **स्थिति के अन्तर के कारण लगान –**
- **रिकार्डो के लगान सिद्धान्त की आलोचनाएँ –**
  - (i) **भूमि की कोई मौलिक तथा विनाशी शक्ति नहीं होती है –**
  - (ii) **भूमि के प्रयोग का कम अव्यवाहरिक है –**
  - (iii) **लगान–रहित भूमि का न होना –**
  - (iv) **पूर्ण प्रतियोगिता की मान्यता ठीक नही है –**
  - (v) **लगान मूल्य में सम्मिलित होता है –**
  - (vi) **लगान उत्पत्ति के अन्य साधनों को भी प्राप्त होता है –**
  - (vii) **श्रम औरपूंजी को संयुक्त साधन मानना गलत :–**

प्रश्न– कीन्स के ब्याज सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

उत्तर– ब्याज तरलता के परित्याग का पुरस्कार है ऐसा कीन्स द्वारा ब्याज के तरलता पसंदगी सिद्धान्त देते समय माना गया। उनके अनुसार ब्याज पर बचत अथवा उधार देने योग्य कोषों की मांग एवं पूर्ति द्वारा निर्धारित नहीं होती है, बल्कि मुद्रा की मात्रा तथा सरलता पसन्दगी द्वारा निर्धारित होती है।

कीन्स के अनुसार, '' ब्याज एक निश्चित अवधि के लिए तरलता के त्याग का पुरस्कार है।''

- **तरलता अधिमान अथवा मुद्रा की मांग :–**
- **तरलता अधिमान के उद्देश्य –**
  - (i) **कार्य सम्पादन का उद्देश्य अथवा लेन–देन उद्देश्य –**
    - (a) **आय उद्देश्य –**

J.D.P.G. COLLEGE

(b) व्यवसाय उद्देश्य –

(ii) दूरदर्शिता उद्देश्य अथवा सतर्कता उद्देश्य –

(iii) सट्टा उद्देश्य

- तरलता अथवा मुद्रा की पूर्ति –
- ब्याज दर का निर्धारण –

कीन्स की तरलता अधिमान सिद्धान्त की अलोचना –

1) सीमित क्षेत्र –
2) उत्पादकता –
3) तरलता बिना बचत नही होती –
4) अल्पकालीन व्याख्या –
5) एकांगी सिद्धान्त –

J.D.P.G. COLLEGE